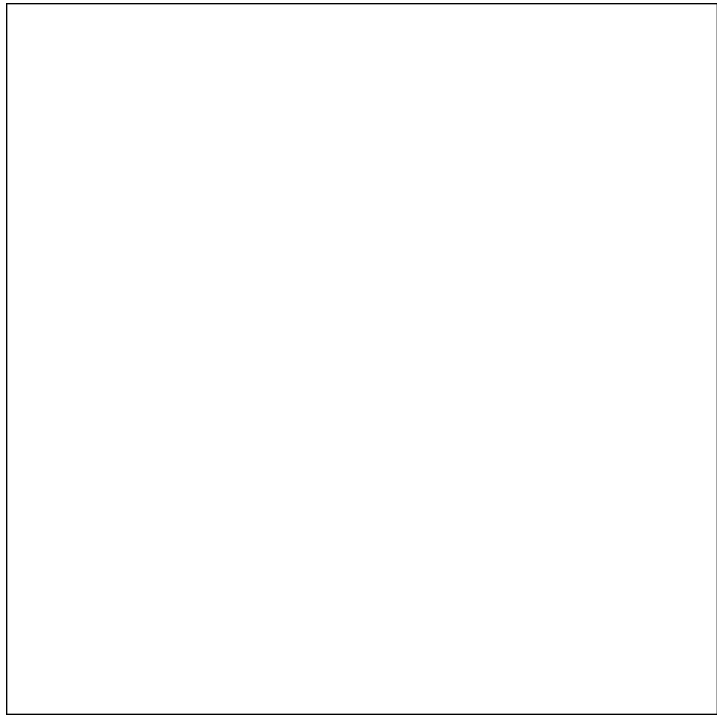




(uten bilder)

Ursula Natula ✎  
Vusi Malindi 🗣️  
Nandani 📄  
hindi 🗣️  
nivå 2 📖



बिना

Barnebøker for Norge  
barnebok.no  
बिना



Skrevet av: Ursula Natula  
Illustret av: Vusi Malindi  
Oversatt av: Nandani

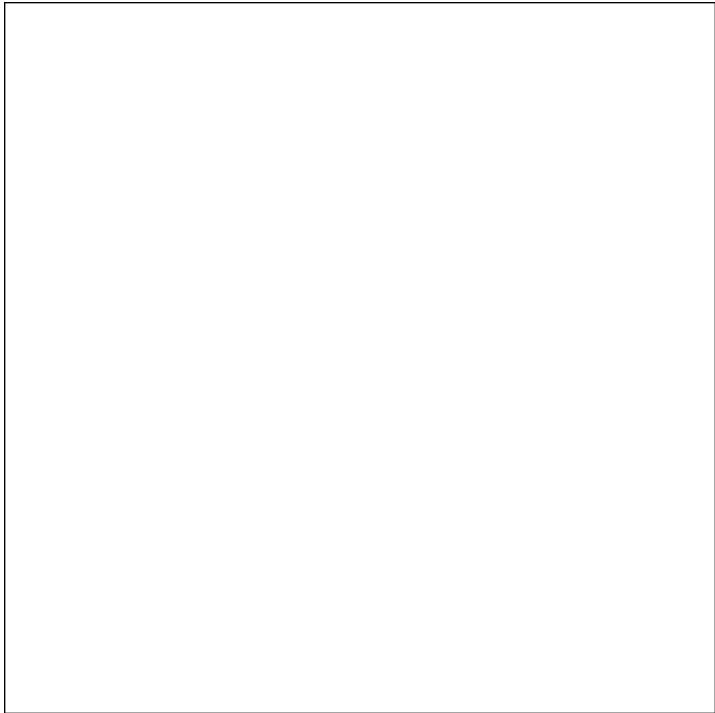
Denne fortellingen kommer fra African Storybook ([africanstorybook.org](http://africanstorybook.org)) og er videreformidlet av Barnebøker for Norge ([barnebok.no](http://barnebok.no)), som tilbyr barnebøker på mange språk som snakkes i Norge.

Dette verket er lisensiert under en Creative Commons Navngivelse 4.0 Internasjonal Lisens.  
<https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/deed.no>



मेरे गांव में बहुत सारी समस्याएं थीं। हमें नल से पानी लेने के लिए बहुत लंबी लाइन लगानी पड़ती थी।

ਮੇਰੇ ਮਨੁੱਖ ਮਨੁੱਖ  
ਮੇਰੇ ਮਨੁੱਖ ਮਨੁੱਖ ਮੇਰੇ ਮਨੁੱਖ ਮਨੁੱਖ





चोरों के कारण हमें अपने अगर जल्दी बंद करने पड़ते थे।

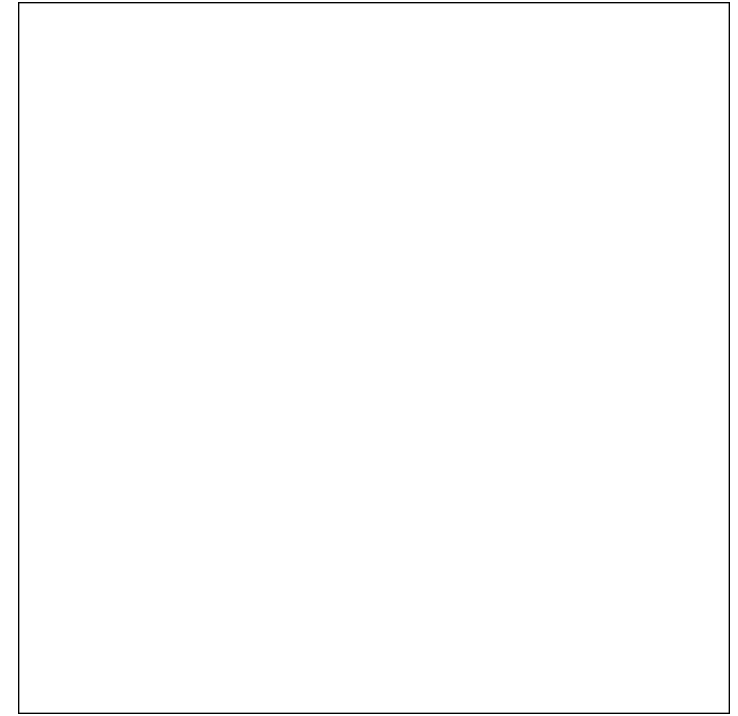


हम ने एक साथ एक स्वर में ज़ोर से कहा “हमे अपनी ज़िंदगी जरूर बदलेंगे”। उस दिन से हम अपनी समस्याओं को हल करने के लिए साथ काम करते हैं।



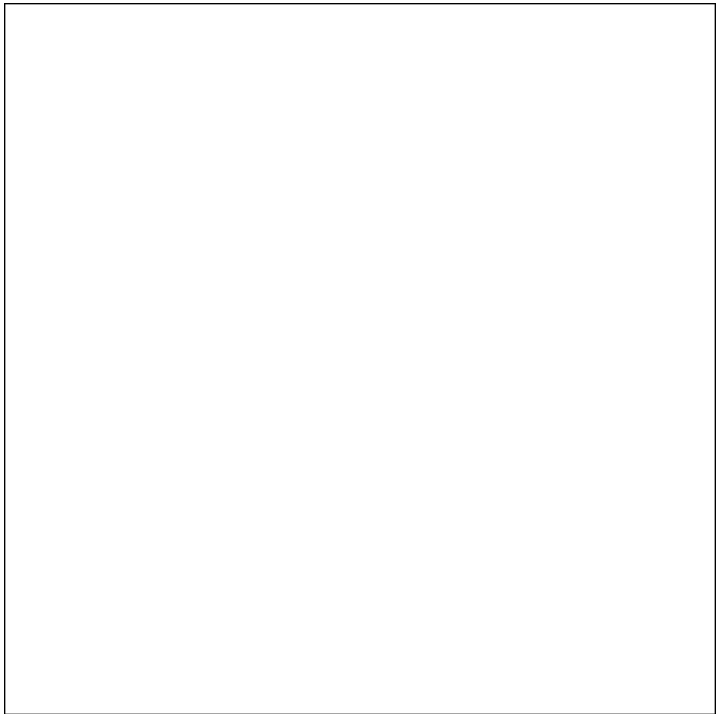


कम उम्र की लड़कियां दूसरे गांव में नौकरानी का काम करती थीं।

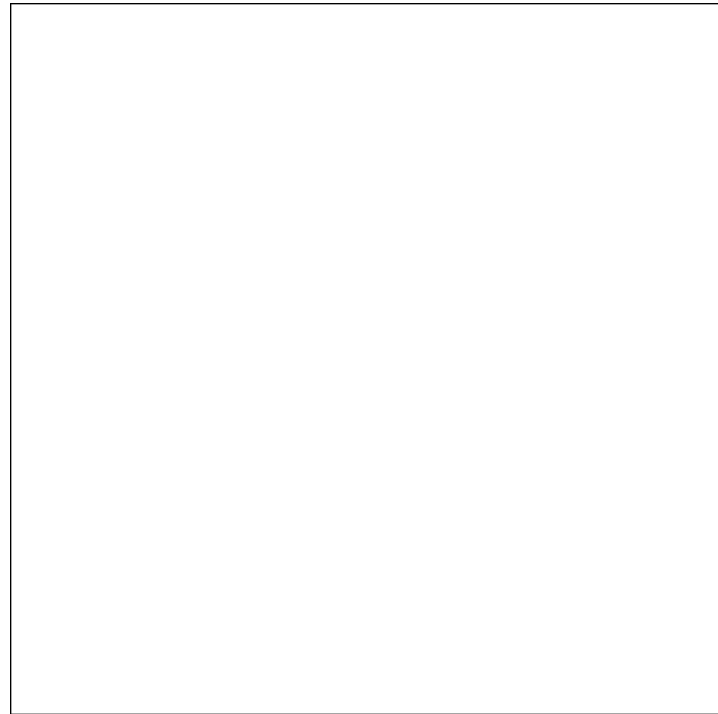


एक महिला ने कहा "औरतें मेरे साथ मिलकर फसल उगा सकती हैं"।

कम उम के लड़के गांव में घूमते रहते थे जबकि  
बाकी हर एक माफ में पढ़ने के लिए ही जाते थे।

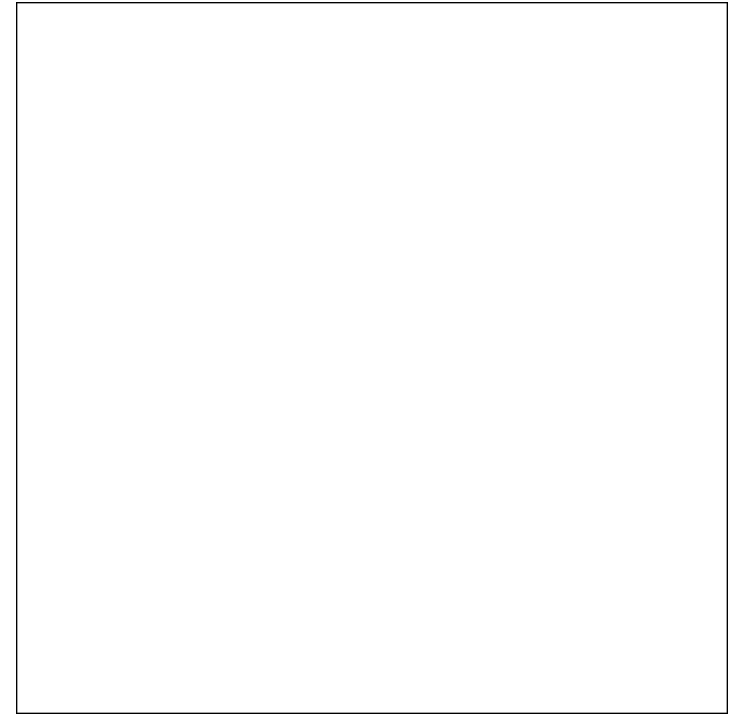


उन्हें किताबें पढ़नी पड़ती थीं और वे भी  
सकते थे। "हमें पढ़ना ही है, हमें पढ़ना ही है।"





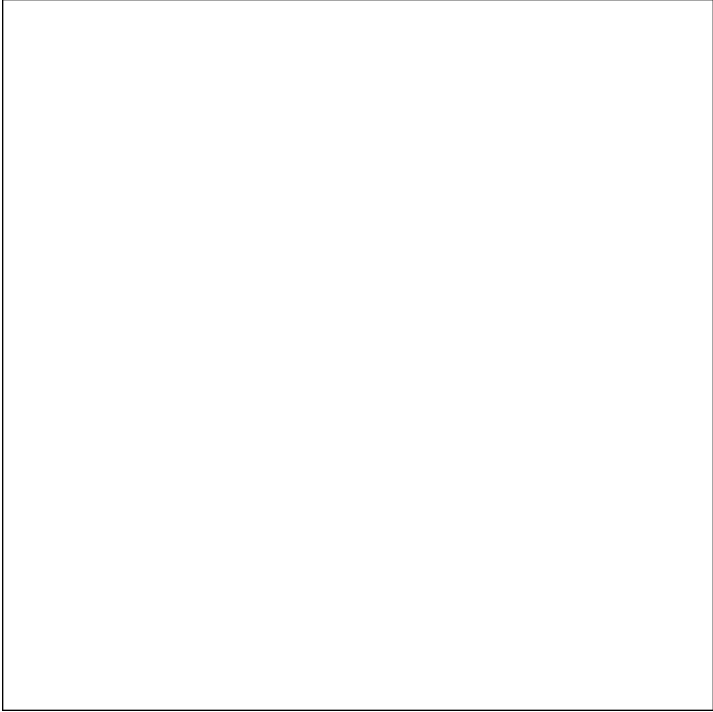
जब हवा चलती तो बेकार पड़े कागज़ पेड़ों और बाड़ों से लटक जाते थे।



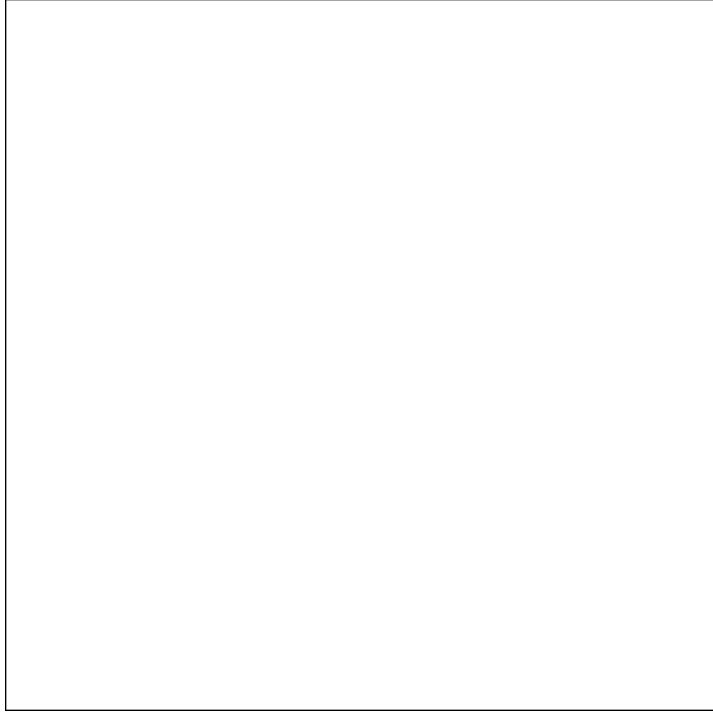
मेरे पिता खड़े हुए और कहा “हमारी समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें साथ मिलकर काम करना होगा”।



असाधारणी से उनके गण कांष के टुकड़ों से लोग  
घायल हो जाते थे।

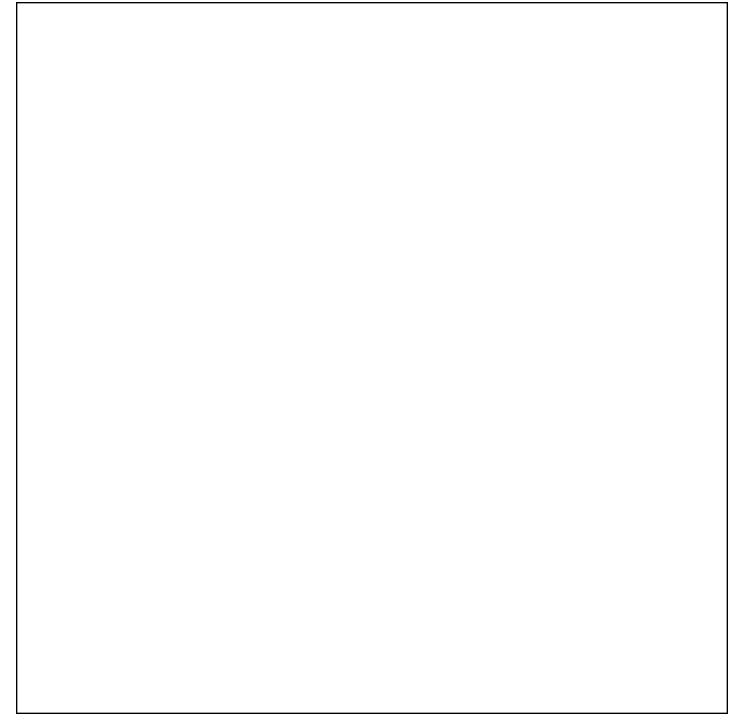


एक बड़े पेट के नीचे लोग इकट्ठा हुए और उन्हीं  
सिना।





एक दिन, नल सुख गया और हमारे बर्तन खाली रह गए।



मेरे पिता ने घर घर जाकर लोगों से अपील की कि वो गांव की बैठक में आए।